

केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान ने विकसित की तकनीकी

अब पोल्ट्री मल-मूत्र से बनेगी बायोगैस

डेली न्यूज, नई दिल्ली। भारतीय वैज्ञानिकों ने देश में ऐसी तकनीक विकसित की है जिससे पोल्ट्री क्षेत्र के पक्षियों के मल मूत्र से बायोगैस तैयार किया जा रहा है और इसका उपयोग गोबर गैस की तरह किया जा सकता है। इस प्रौद्योगिकी के विकास से न केवल स्वच्छता को बढ़ावा मिल सकेगा बल्कि पोल्ट्री उद्योग चलाने वाले किसान अतिरिक्त आय अर्जित कर सकेंगे, जैविक कृषि को बढ़ावा मिल सकेगा, पक्षियों के मल मूत्र से होने वाले प्रदूषण पर रोक लग सकेगी तथा मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर नहीं हो सकेगा।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान इज्जतनगर, बरेली के वैज्ञानिकों ने गहन अनुसंधान के बाद इस प्रौद्योगिकी का विकास किया है जिससे सभी मौसम में विशेषकर पोल्ट्री के पक्षियों के मल मूत्र से बायोगैस तैयार किया जा सकेगा। इससे 60.02 प्रतिशत मिथेन गैस निकलती है जो खाना पकाने के एलपीजी गैस की तरह जलती है। मिथेन गैस पर्यावरण के लिए बहुत



हानिकारक है। संस्थान के वैज्ञानिकों के अनुसार सर्दी और गर्मी के मौसम में 12-13 किलो से 19-20 किलो तक पक्षी मल मूत्र से एक घन मीटर बायो गैस तैयार किया जाता है। इस गैस से चार पांच लोगों के परिवार के लिए प्रतिदिन तीन बार का खाना एवं नाश्ता तैयार किया जा सकता है। इसके अलावा तापमान कम होने पर इसका उपयोग पाल्ट्री उद्योग में चूजों को गर्मी प्रदान करने के लिए भी किया जा सकता है जो आम तौर पर बिजली के बल्ब से किया जाता है। यह देखा गया है कि सर्दियों में तापमान कम होने पर बायोगैस संयंत्र में गैस उत्पादन काफी कम हो जाता है लेकिन इज्जतनगर की तकनीक में यह समस्या नहीं है।